9 ट्रांस जेण्डर/तृतीय लिंग

M88YG2

मीता, उसके भैया और माँ, मीता के स्कूल की गतिविधियों पर चर्चा कर रहे थे। तभी मीता के पिताजी आए। उनके पूछने पर मीता ने उन्हें भी अपने स्कूल की बातें बतायीं। पिताजी ने बताया कि वे एक ऐसे कार्यक्रम में गए थे जहाँ एक परिचर्चा हो रही थी। मीता ने पूछा परिचर्चा क्या होती है? तब पिताजी ने बताया इसमें लोग मिल–जुल कर किसी विषय पर बातचीत कर अपनी राय बताते हैं। आज की परिचर्चा उन लोगों के बारे में थी जो तीसरे जेण्डर या ट्रांस जेण्डर कहलाते हैं। मीता के पूछने पर उन्होंने बताया कि ऐसे लोगों में जन्म के समय के जेण्डर (लड़की या लड़का होना) और बड़े होने के बाद के जेण्डर में अंतर हो सकता है। यह भी उतना ही प्राकृतिक होता है जितना हमारा गोरा, काला या सांवला होना। इसमें किसी का कोई दोष नहीं होता। माँ, भैया और मीता की उत्सुकता को देखकर पिताजी ने आगे बताया कि –

- ✶ ऐसे लोगों का पहनावा, बोलचाल, रहन–सहन का तरीका वे जैसे दिखते हैं उससे अलग हो सकता है।
- ✶ ऐसे लोगों की अक्सर समाज में उपेक्षा की जाती है। लोग उन पर हँसते हैं, उन्हें छेड़ते हैं, परेशान करते हैं और उनके लिए गंदी बातें करते हैं।
- ✶ कभी–कभी इनके माँ–पिताजी या रिश्तेदार भी उन्हें अपनाने से मना कर देते हैं जिससे वे बड़ी कठिनाई से अपना जीवन–यापन करते हैं।
- ✶ कभी–कभी परिवार या दूसरे लोगों के बुरे/गलत व्यवहार के कारण ये आत्महत्या भी कर लेते हैं।

भैया ने दुखी होकर कहा– लोग क्यों नहीं समझते कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान के साथ जीने और शिक्षा पाने का पूरा अधिकार है। हमें सभी के साथ सामान्य और सम्माननजक व्यवहार करना चाहिए, हो सके तो उनकी सहायता भी करना चाहिए।

पिताजी ने कहा –

- ➢ वे भी हमारे जैसे ही हैं।
- ➢ वे हमारे जैसा सब कुछ कर सकते हैं।
- ➢ उनकी जरूरतें भी हमारे जैसी ही होती हैं।
- ➢ हमें इनके साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए।
- ➢ उन्हें भी हमारे जैसे सभी अधिकार हैं।
- ➢ वे भी हमारे जैसे ही प्यार, अपनापन और सम्मान पाने के हकदार हैं।
- ➢ उनके साथ भी हमारा व्यवहार इतना अच्छा होना चाहिए जैसा हम दूसरों के साथ करते हैं और अपने लिए चाहते हैं।

मीता और भैया ने कहा –

पिताजी हम इन बातों का हमेशा ध्यान रखेंगे और अपने साथियों को भी बताएंगें।